Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

निर्गुण भक्ति में परमात्मा का एकेश्वरवाद स्वरूप

Seema Rani*

M.A. Hindi (UGC Net)

सार - भक्ति काल में अनके संत हुए हैं जिन्होनें परमात्मा की भक्ति की दो काव्यधारा सगुण और निगुर्ण भक्ति की विचारधारा का प्रतिपादन किया। निर्गुण भक्ति का प्रतिपादन करने वाले महात्माओं ने परमात्मा के एकेश्वरवाद अर्थात परमात्मा जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है। वो एक ही है। वह सारे संसार से अलग है तथा लोक और वेद दोनों से परे है। सब महात्माओं का यही अनुभव है कि जिस परमात्मा से हम मिलना चाहते हैं वह एक है। यह नहीं कि हिन्दुओ का कोई और या सिक्खों और ईसाईयों का कोई ओर।

----------X----------

शेख साअदी कहते हैं- 'बनी आदम आअजाए एक दीगर अन्द किह दर आफ़रीनश जि यक जौहर अन्द' अर्थात सब इंसान एक ही जिस्म के जुदा जुदा अंगों से निकलते हैं।

गुरू अर्जुन देव जी फरमाते हैं-

'एकु पिता एकस के हम बारिक'।

सभी इंसान एक ही परमात्मा के बच्चे हैं और सबका एक ही पिता है। इसलिए सभी भाई-भाई हैं।

गुरू नानक साहब कहते हैं - 'सभना जीआ का इकु दाता'।

सिर्फ इंसानों को ही नहीं संसार के सभी जीवों को पैदा करने वाला वह एक ही परमात्मा है।

मुसलमान फकीर उस परमात्मा को 'रब्बुल आलमीन' कहकर याद करते हैं कि सारे आलम का एक ही परमात्मा है और हमेशा से ही वही परमात्मा चला आ रहा है। यह नहीं कि पहले कोई और परमात्मा था या अब कोई और परमात्मा है।

गुरू अमरदास जी फरमाते हैं- 'जग जीवनु साच्चा इकु दाता'।

सारे जग को जीवन देने वाला एक ही दाता है और वह हमेशा से ही सच्चा है यानि वह मरण जन्म से रहित है।

जपुजि साहिब के शुरू में ही गुरू नानक साहिब जी फरमाते हैं - 'आदि सचु जुगादी सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु'।

आप कहते हैं कि हमारे तजुरबे में एक ऐसी चीज आई है जो आदि जुगाद से सच चली आ रही है। जो कभी नाश या फना नहीं होती। वह एक परमात्मा है। जिसके महात्माओं ने अपने-अपने नाम प्यार में आकर रखे हुए हैं। उस मालिक के अलावा जो कुछ भी हम आंखों से देख रहे है। सबने नष्ट या फ़ना हो जाना है। कोई भी चीज यहा स्थिर नहीं है।

गुरू अमरदास जी फरमाते हैं- 'हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु'। अर्थात हरि उस परमात्मा के बिना सब कुछ मैल है, झूठ है। सिर्फ एक वो परमात्मा ही सच है। उसके सिवाह संसार की किसी भी वस्तु में कोई सच्चाई नहीं है। इसी तरह गुरू नानक साहिब एक और जगह फरमाते हैं-

'कूडु राजा कूडु परजा कूडु सभु संसारू'।

कूडु मंडप कूडु माडी कूडु वैसनहारू।

कूडु सुइना कूडु रूपा कूडु पैनहणहारू।

कूडु काइआं कूडु कपडु कूडु रूपु अपारू।

कूडु मीआ कूडु बीबी खपि होए खारू।

कूडि कूडै नेहु लगा विसरिआ करतारू।

किसु नालि कीचै दोसती सुभ जगु चलणहारू।।

हमारा शरीर कूड है और नाशवान है और इसके अंदर बैठकर जिस दुनिया को हम अपना बनाने की कोशिश करते हैं। जिसके साथ प्यार किए बैठे हैं। यह भी कूड है। दुनिया में कोई भी चीज हमारी दोस्ती या प्यार के काबिल नहीं है सिवाय उस परमात्मा के, क्योंकि उसके सिवाह हर एक चीज नाशवान है।

www.ignited.in

सिर्फ एक मालिक ही है जो हमेशा रहता है। वह परमात्मा खुद हमारे शरीर के अंदर बैठा है। हम उसे बाहरी आंखों के द्वारा बाहर ढूंढने की कोशिश करते हैं। वह हमें कैसे नजर आ सकता है। हम मनमुख हैं, मुगध और गंवार हैं, जो चीज हमारे घर के अंदर है, उसे हम बाहर ढूंढ रहे हैं।

कबीर साहिब का यही अनुभव है-

'ज्यो तिल माहीं तेल है ज्यों चकमक में आगि।

तेरा सांई तुज्झ में जागि सके तो जागि।।

जिस परमात्मा ने इस दुनिया की रचना की है। वह चैबीस घंटे वह साथ-साथ है। लेकिन हम दुनिया के जीव अपनी देह के अंदर जाकर कभी परमात्मा की खोज करने की कोशिश नहीं करते है। हमेशा उसे या तो जंगलों और पहाडों में ढूंढने की कोशिश करते हैं या फिर ग्रंथो या पोथियों में से पाना चाहते हैं या समझते हैं कि वह गुरूद्ववारों, मंदिरों, मस्जिदों या गिरिजाघरों में ही मिल सकता है। कभी विचार आता है कि वह कहीं आसमानों के पीछे छिपा बैठा है, लेकिन जिस जगह वह परमात्मा है उस जगह तलाश नहीं करते।

गुरू अमरदास जी फरमाते हैं कि-'गुरूमुखी होवै सु काइआ खोजै होरसभ भरमि भुलाई'।

कबीर साहिब ने तो बडे जोरदार लफजों में हमारे ख्याल को इस वहम और भ्रम से निकालने की कोशिश की है। आप समझाते हैं-

कांकर पाथर जोरी के मसजिद लई चुनाय।

ता चढि मुल्ला बांग दे, कया बहिरा हुआ खुदाय।

मुल्ला चढि किलकारियां, अलख न बहिरा होय।

जेहि कारन तू बांग दे सो दिलही अंदर जोय।

तुर्क मसीते हिन्दू देहरे, आप आप को धाय

अलख पुरूष घर भीतरे, ता का द्वार न पाय।।

हम पत्थर और इंटें इक्टठी करके मस्जिद या मालिक के रहने की जगह बना लेते हैं और उसके उपर चढकर मौलवी उंची-उंची बांग देकर परमात्मा को पुकारता है। जैसे परमात्मा बहरा है और हमारी आवाज उस तक नहीं पहुच सकती। आप समझाते हैं कि ऐ मुल्ला वह खुदा बहरा नहीं है। जिस खुदा के लिए तूं इतने जोर-जोर से चिल्ला रहा है। वह तो तेरे अंदर ही मौजूद है। मुसलमान उस खुदा को मस्जिद के अंदर ढूंढ रहे है। हिन्दू मंदिरों में जाकर खोज कर रहे है। लेकिन वह अलख पुरूष वह परमपिता परमात्मा तो उनके शरीर के अंदर ही है और अंदर ही मिलेगा।

वेद कुरानां पढ-पढ थक्के।

सजदे करदयां घस गए मत्थे।

ना रब तीरथ ना रब मक्के

जिस पाया तिस नूर अनवार।।

जो हमने परमात्मा के रहने के स्थान बनाए है कितना अफसोस है कि हम उन स्थानों में जाकर दिन रात उस परमात्मा को खोज रहे है। और जिस मस्जिद यानी शरीर के अंदर वह परमात्मा रहता है। वह शरीर उस मालिक की याद में दिन रात दुख उठा रहा है। अगर कोई सच्चे से सच्चा गुरूद्वारा, मंदिर या गिरजा है वह केवल हमारा अपना शरीर है। यह जगह परमात्मा ने अपने रहने के लिए खुद बनाई है। और इसके अंदर वह खुदा रहता है। कबीर साहिब यह उपदेश देते हैं।

अवलि अलह नूर उपाइया कुदरति के सब बंदे।

एक नूर ते सभु जगु उपजिओ कउन भले को मंदे।।

इसी तरह बाईबल में ईसा मसीह ने समझाया है वह सच्ची ज्योति जगत में आने वाले हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है। उस परमात्मा का नूर और प्रकाश हर एक के अंदर है। ना कोई बुरा है ना कोई अच्छा है। सब अपने-अपने कर्मो के अनुसार अपना-अपना हिसाब दे रहे है। इसलिए महात्मा समझाते हैं कि उस परमात्मा की खोज बाहर नहीं बल्कि अपने शरीर और देह के अंदर करनी चाहिए।

संदर्भः-

1. गुलिस्तां, पृ0 42
2. गुरू अर्जुन देव आदि ग्रन्थ, पृ0 611
3. गुरू नानक देव आदि ग्रन्थ पृ0 2
4. गुरू अमरदास जी आदि ग्रन्थ पृ0 1045
5. गुरू नानक देव जी आदि ग्रन्थ पृ0 1

www.ignited.in

6. गुरू अमरदास जी आदि ग्रन्थ आदि ग्रन्थ पृ0 910

7. गुरू नानक देव जी आदि ग्रन्थ पृ0 468

8. गुरू अमरदास जी आदि ग्रन्थ पृ0 754

9. कबीर साखि संग्रह पृ0 165

10. कबीर साखि संग्रह पृ0 106

11. कबीर आदि ग्रन्थ पृ0 1349

12. बाईबल जोन 1:9

13. कुल्लियातेःबुल्लेशाह काफी 76

Corresponding Author

Seema Rani*

M.A. Hindi (UGC Net)

sunderrathi1977@gmail.com